"प्रेमचंद के उपन्यासों में

चित्रित किसान समस्याएँ ---

एक अनुशीलन"

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की

एम.फिल. [हिन्दी] उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु - शोध प्रबन्ध

प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित किसान समस्याएँ -

एक अनुशीलन

शोध छात्र : प्रा. गोटूरी डी. के.
डा. घाळी कालेज,
गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर [महाराष्ट्र]

शोध निर्देशक : डा. वसंत केशव मोरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजर्षि छ. शाहू महाविद्यालय, कोल्हापुर.
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर [महाराष्ट्र]

दिसम्बर १९८७

डा. वसन्त केशव मोरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजर्षि छ. शाहू महाविद्यालय,
कोल्हापुर।

स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर [महाराष्ट्र]

प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा. डी. के. गोटूरी ने शिवाजी विश्वविद्यालय की "एम. फिल. [हिन्दी]" उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध "प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित किसान समस्याएँ – एक अनुशीलन" मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। श्री गोटूरी डी. के. ने प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

[डा. वसन्त केशव मोरे]

कोल्हापुर

दिनांक : ५ / १२ / १९८७.

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ क्र.
प्राक्कथन		1 to 4
प्रथम अध्याय	प्रेमचंद के उपन्यास	5 to 14
द्वितीय अध्याय	प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विविध समस्याएँ	15 to 52
तृतीय अध्याय	प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित किसान समस्याएँ	53 to 79
उपसंहार		80 to 93
संदर्भ ग्रंथ सूची		94 to 95

प्राक्कथन

प्राक्कथन :

हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद जी का स्थान अद्वितीय है। प्रेमचंद जी का आगमन हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक नया मोड़ निर्माण करता है। मेरे कालेज जीवन में मुझे प्रेमचंदजी की अमर कृति "गोदान" पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तबसे ही मेरे मन में उनके प्रति एक सादर आकर्षण पैदा हो गया था। आज जब मेरे सामने लघुशोध प्रबन्ध का विषय चुनने का मौका मिला, तो अनायास मेरे सामने "प्रेमचंदजी" साकार हो उठे। जब मैंने इस विषय का प्रस्ताव श्रध्देय गुरुवर्य डा. मोरे जी के सम्मुख रखा तो आपने हामी भर दी तथा विषय की गहराई के प्रति मुझे सचेत भी किया।

प्रेमचंदपूर्व युग में लिखे गये उपन्यास केवल ऐय्यारी और तिलिस्म से भरे हुये थे। उनका उद्देश्य केवल मनोरंजन था। उन उपन्यासों में सामाजिकता न के बराबर थी। हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंदजी ने पहली बार सामाजिक उपन्यास लिखे। मानव के सुख-दु:ख का अपने उपन्यासों में चित्रण कर प्रेमचंदजी ने हिन्दी उपन्यास विधा को ही एक नया मोड़ दिया। फलस्वरूप विद्वानों ने उन्हीं के नाम से उपन्यास साहित्य के इतिहास का काल विभाजन किया है। सही अर्थों में वे "उपन्यास सम्राट" बन गये।

विषय की निश्चिति के बाद मेरे सम्मुख निम्नांकित प्रश्न विचारार्थ रहे हैं ---

अ] प्रेमचंद जी ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक नया मोड़ दिया। उपन्यास में "मानव" को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। अगर ऐसा है तो, प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में कौन-कौन सी समस्याओं का चित्रण किया है ?

ब] प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में युगजीवन का चित्रण किया है साथ ही साथ युग - प्रवर्तन का कार्य भी किया है। भारत कृषिप्रधान देश है। तत्कालीन युग में अस्सी प्रतिशत भारतीय जनता किसान थी और आज भी है। मेरा दूसरा प्रश्न है अगर प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में युग जीवन का चित्रण किया है तो क्या उन्होंने युगीन किसानों की समस्याओं का चित्रण किया है ?

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

क] अगर प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में किसान समस्याओं का चित्रण किया है, तो वे कौन - कौन सी समस्याएँ हैं, जिनका उन्होंने अपने उपन्यासों में चित्रण किया है ?

ड] प्रेमचंद जी ने तत्कालीन जनता की एवं किसानों की विविध समस्याओं का चित्रण किया है। क्या उन्होंने सिर्फ समस्याओं का चित्रण ही किया है ? या उन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है ?

इ] मेरा अन्तीम प्रश्न है, प्रेमचंद जी के अपने उपन्यासों में चित्रित समस्याओं के समाधान कहाँ तक उचित - अनुचित है ?

इन प्रश्नों की सहायता से मैंने प्रेमचंद जी के उपन्यासों में चित्रित किसान समस्याओं का अनुशीलन करने की कोशिश की है।

अत: इस समग्र विवेचन को मैंने निम्नांकित ढंग से प्रस्तुत किया है --

प्रथम अध्याय : प्रेमचंद के उपन्यास

इस अध्याय में मैंने प्रेमचंदजी के प्रारंभिक उर्दू उपन्यासों का जिक्र करके, क्रमश: उनके सभी हिन्दी उपन्यासों की संक्षिप्त जानकारी देने की कोशिश की है, जिस से पाठकों को प्रेमचंद जी के महान साहित्यिक कार्य का परिचय संक्षिप्त रूप से प्राप्त हो।

द्वितीय अध्याय : प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विविध समस्याएँ

प्रस्तुत अध्याय में मैंने प्रेमचंद जी के उपन्यासों में किसान समस्या के अलावा जिन प्रमुख समस्याओं का चित्रण हुआ है, उनका विवेचन किया है। इनमें प्रमुख समस्याएँ निम्नांकित हैं --

१. रियासतों और देशी नरेशों की समस्या।
२. सांप्रदायिक समस्या।
३. वेश्या समस्या।
४. विधवा समस्या।

५. विवाह समस्या।

६. औद्योगिक समस्या।

७. अस्पृश्यता की समस्या।

८. पारिवारिक समस्या।

इनके अलावा शैक्षणिक समस्या, स्वतंत्रता की समस्या, मध्यवर्ग की समस्या, पुनर्जन्म आदि की समस्या आदि अनेक छोटी बड़ी समस्याओं का जिक्र किया है।

तृतीय अध्याय : प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित किसान समस्याएँ

यही अध्याय मेरे लघु शोध प्रबन्ध का हृदय-स्थल है। प्रेमचंद जी ने किसानों की विविध समस्याओं का अपने उपन्यासों में चित्रण किया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने उन समस्याओं को चार विभागों के अंतर्गत रखकर विवेचन किया है। ये चार विभाग निम्नांकित हैं --

१. धार्मिक समस्या।

२. आर्थिक समस्या।

३. सामाजिक समस्या।

४. राजनीतिक समस्या।

इस प्रकार विषय का विचार करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार में रखे गये हैं और अंत में सहायक ग्रंथों की सूची भी जोड़ दी है।

अहिन्दी भाषी छात्र होते हुए भी मैंने अपने इस प्रथम प्रयास को पूरा करने में सफलता पायी है, जिसमें श्रध्देय गुरुदेव डा. वसन्त मोरे जी का अध्ययन सम्पन्न पथप्रदर्शन बहुत बड़ा सहायकमन्द साबित हुआ है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद श्रध्देय डा. मोरे जी ने एक सफल निर्देशक के रूप में मुझपर जो ऋण किया है उससे उऋण हो पाना केवल असम्भव है। प्रस्तुत लघु - शोध प्रबन्ध के गुण आपके हैं और त्रुटियाँ मेंरी हैं।

अध्यापक का उत्तरदायित्व सम्भालते हुए इस संशोधन कार्य में अधिक समय देना मेरे लिए नामुमकीन था लेकिन वात्सल्यभरी प्रेरणा देने वाली विद्या प्रसारक मंडल गडहिंग्लज की अध्यक्षा श्रध्देया श्रीमती रत्नमाला घाळी जी ने मुझे उत्साहित किया। संस्था के सचीव श्रध्देय प्राचार्य व्ही. एस. आलूरकर जी तथा डा. घाळी कालेज के प्रधानाचार्य श्रध्देय एस. के. खोबरे जी का स्नेहभरा योगदान न मिलता तो मैं प्रस्तुत संशोधन कार्य में सफल हो न पाता। संस्था के सह. सचीव श्री ए. ए. रिंगणे और श्री एस. एम. दड्डी तथा मेरे सभी सहअध्यापकों के प्रति मैं तहे दिल से आभार व्यक्त करना अपना फर्ज मानता हूँ।

मेरे इस संशोधन कार्य में मुझे निरंतर प्रेरित करने वाले और अपनी ओर से सक्रीय योगदान देने वाले मेरे पथप्रदर्शक मित्र प्रा. टी. ए. शिवारे, प्रा. सुभाष शिरकोळे, प्रा. विजय शेट्टी, डा. आनन्द वास्कर, प्रा. राजन गवस आदि दोस्तों को मैं धन्यवाद देता हूँ। साथ ही शिवाजी विश्वविधालय तथा डा. घाळी कालेज के ग्रंथपाल एवं अन्य सभी कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

श्रध्देय प्राचार्य डी. यू. पवार और श्रध्देय श्री शिवाजीराव मोरे जी का आशीर्वाद मेरी अनेकों समस्याओं में सफलता देता रहा है। भविष्य में भी इन सब लोगों से आशीर्वादमयी योगदान की कामना करते हुए सुधी समीक्षकों के सामने प्रस्तुत लघु - शोध प्रबन्ध अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

सधन्यवाद।

भवदीय,

[डी. के. गोटूरी.]

गडहिंग्लज

दिनांक : ५/१२/८७